



बढ़ते कदम

वर्ष-15
अंक-10
2017

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

प्रकृति के दो पहलू

भारत के संविधान में राजभाषा

राजभाषा अधिनियम, 1963

(यथासंशोधित, 1967)

(1963 का अधिनियम संख्यांक 19)

उन भाषाओं का, जो संघ के राजकीय प्रयोजनों, संसद में कार्य के संव्यवहार, केन्द्रीय और राज्य अधिनियमों और उच्च न्यायालयों में कतिपय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाई जा सकेंगी, उपबन्ध करने के लिए अधिनियम। भारत गणराज्य के चौदहवें वर्ष में संसद द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो:-

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ-

(1) यह अधिनियम राजभाषा अधिनियम, 1963 कहा जा सकेगा।

(2) धारा 3, जनवरी, 1965 के 26 वें दिन को प्रवृत्त होगी और इस अधिनियम के शेष उपबन्ध उस तारीख को प्रवृत्त होंगे जिसे केन्द्रीय सरकार, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियत करे और इस अधिनियम के विभिन्न उपबन्धों के लिए विभिन्न तारीखें नियत की जा सकेंगी।

2. परिभाषाएं--इस अधिनियम में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,

(क) 'नियत दिन' से, धारा 3 के सम्बन्ध में, जनवरी, 1965 का 26वां दिन अभिप्रेत है और इस अधिनियम के किसी अन्य उपबन्ध के सम्बन्ध में वह दिन अभिप्रेत है जिस दिन को वह उपबन्ध प्रवृत्त होता है;

(ख) 'हिन्दी' से वह हिन्दी अभिप्रेत है जिसकी लिपि देवनागरी है।

3. संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा का रहना--

(1) संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि की समाप्ति हो जाने पर भी, हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा, नियत दिन से ही,

(क) संघ के उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए जिनके लिए वह उस दिन से ठीक पहले प्रयोग में लाई जाती थी; तथा

(ख) संसद में कार्य के संव्यवहार के लिए प्रयोग में लाई जाती रह सकेगी :

परन्तु संघ और किसी ऐसे राज्य के बीच, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग में लाई जाएगी:

परन्तु यह और कि जहां किसी ऐसे राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है और किसी अन्य राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, बीच पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाया जाता है, वहां हिन्दी में ऐसे पत्रादि के साथ-साथ उसका अनुवाद अंग्रेजी भाषा में भेजा जाएगा :

परन्तु यह और भी कि इस उपधारा की किसी भी बात का यह अर्थ नहीं लगाया जाएगा कि वह किसी ऐसे राज्य को, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संघ के साथ या किसी ऐसे राज्य के साथ, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है, या किसी अन्य राज्य के साथ, उसकी सहमति से, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाने से निवारित करती है, और ऐसे किसी मामले में उस राज्य के साथ पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बाध्यकर न होगा।

(2) उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी या अंग्रेजी भाषा--

(i) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और दूसरे मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के बीच ;

(ii) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के बीच ;

(iii) केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के और किसी अन्य ऐसे निगम या कम्पनी या कार्यालय के बीच ;

प्रयोग में लाई जाती है वहां उस तारीख तक, जब तक पूर्वोक्त संबंधित मंत्रालय, विभाग, कार्यालय या विभाग या कम्पनी का कर्मचारीवृद्ध हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता, ऐसे पत्रादि का अनुवाद, यथास्थिति, अंग्रेजी भाषा या हिन्दी में भी दिया जाएगा।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—

— सुधांशु कुमार विश्वास —	3
रुमटेक मठ —	
— आर के सिंह	4
संसद भवन—	
— इंद्र ज्योति राय	5
मोबाइल टावर—	
— विकास कुमार	7
अंजीर—	
— शिवांशु कुमार	8
जाने भारतीय नोटो...—	
— रीतेश कुमार सिंह	10
बंगाल की तांत —	
— सुचेता कृपाशंकर	12
पोंगल	
— विजय कुमार तिवारी	13
किस्मत बदल गई	
— प्रियंका पाण्डेय	14
अंक ज्योतिष में... —	
— आलोक कुमार मिश्रा	17
वसंत	
— स्मृति कुमारी	18
सूरज	
— साक्षी कुमारी	18
चित्र वीथिका	19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं
इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – Rajbhasha.malda@gmail.com
Web: www.er.indianrailway.gov.in

वसंतोत्सव

शीत ऋतु के बाद आने वाली ऋतु का नाम है वसंत। भारत में फरवरी और मार्च में इस ऋतु का आगमन होता है। बहुत सुहावनी ऋतु है यह। इस ऋतु में जलवायु सम रहती है अर्थात् सर्दी और गर्मी की अधिकता नहीं होती है। इस ऋतु में प्रकृति में सर्वत्र नवीनता का समावेश दृष्टिगोचर होता है। इसलिए इसे ऋतुओं का राजा या ऋतुराज कहा जाता है।

कामदेव को वसंत का दूत माना जाता है। काम को ही सृष्टि का संचालक कहा गया है। इसी के वजह से जीवन में अतृप्ति बनी हुई है और साथ ही साथ उल्लास और उमंग भी उत्पन्न होते हैं। उत्साह से जीवन के सभी क्रियाकलाप संचालित होते हैं। इसी से श्रम करके जीने की चाह उत्पन्न होती है। इस ऋतु में प्रिय का साथ बहुत ही प्यारा लगता है। कवियों ने तो यहां तक कहा है कि इसमें काम वासना बढ़ जाती है और विरह की वेदना असहनीय हो जाती है। वसंत ऋतु की इन्हीं खूबियों के कारण गीता में भगवान कृष्ण ने कहा था-ऋतुओं में मैं वसंत हूँ।

वसंत ऋतु मनमोहक ऋतु होती है। इस ऋतु में गुलाब, गेंदा, सूरजमुखी, सरसों आदि के फूल बहुतायत में खिलते हैं। हवा में इन फूलों की सुगंध और मादकता का प्रभाव परिलक्षित होता है। रंग-बिरंगे फूलों को देखकर आँखें तृप्त हो जाती हैं। पेड़ों की पुरानी पत्तियाँ झड़ती हैं और उनमें नई कोमल पत्तियाँ उग आती हैं। टेसू के फूल और आम तथा लीची की मंजरियाँ। नवकिसलय वाले पेड़ों की शोभा बरबस मन को आकृष्ट करते रहते हैं। खेतों की तरफ दृष्टि जाने से सरसों के पीले फूलों से पूरी धरती पटी नजर आती है।

मनुष्यों के साथ-साथ पशु-पक्षी भी बहुत खुश दिखते हैं। तितलियाँ और भंवरे फूलों पर मँडरा रहे होते हैं, आम की मंजरियों से निकलने वाली मादक सुगंध किसी बगिया से गुजरने पर मदहोश करने लगती है। मुग्ध होकर कोयल कुहू-कुहू का रट लगा रही होती है। प्रकृति से दूर होता जा रहा मनुष्य अपनी मिट्टी की खुशबू ही नहीं पहचान भी भूल रहा है परंतु आधुनिकता की इस अंधी दौड़ से निकल कर उसे वापस प्रकृति की गोद में लौटना ही श्रेयस्कर होगा। फिर भी वसंत अपनी छटा तो बिखेरता ही है। भले उसकी कोई कद्र करे या न करे।

— सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साहू अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	सुधांशु कुमार विश्वास राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक	दयामय दास कनिष्ठ इंजीनियर

रूमटेक मठ

रूमटेक मठ, सिक्किम राज्य के रूमटेक में स्थित है जो गंगटोक से 24 किमी. की दूरी पर अवस्थित है। यह मठ, समुद्र स्तर से लगभग 6000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है और राजधानी गंगटोक शहर के समीप ही बना हुआ है। यह मठ तिब्बत के बाहर, काग्यु वंश के महत्वपूर्ण केन्द्रों में से एक है। रूमटेक मठ, तिब्बत के सुरफू मठ के समान बनवाया गया है।

पूरे सिक्किम में है सबसे बड़ा मठ है जो चार मंजिला है। तिब्बत पर चीनी आक्रमण के बाद, तिब्बत के ग्यालवा अपने कुछ भिक्षुओं के साथ यहां आकर बस गए। इसके बाद, चोग्याल ने रूमटेक के इस क्षेत्र को इन भिक्षुओं को तोफहे के रूप में दे दिया था। कालक्रम में इसे धार्मिक एवं आध्यात्मिक अध्ययन के लिए एक केन्द्र के रूप विकसित किया गया। इसमें सोने का बना एक स्तूप भी है जो आभूषणों से सजा हुआ है। मान्यता है कि, मठ के स्तूप में 16वें ग्यालवा करमापा की अस्थियां रखी गई हैं।

इस मठ में एक धार्मिक विद्यालय और ध्यान एवं साधना करने के व्यवस्था है। यह मठ, तिब्बती बौद्ध धर्म के प्रसिद्ध धार्मिक केन्द्रों में से एक है। इसे धर्म चक्र केन्द्र के रूप में भी जाना जाता है तथा इसके लिए भी एक विशेष खण्ड है। इस मठ में संयासियों एवं लामाओं के लिए बुद्ध के मध्यम मार्ग को अपनाने की सीख दी जाती है जिसके अनुसार आसक्ति दुख का कारण है, लोभ, मोह, द्वेष दुख का कारण है, प्रेम त्यागपूर्ण होना चाहिए, तृष्णापूर्ण प्रेम दुखों का कारण है। व्याकुल होना, चिंतित होना, परेशान होना, उदास होना, तनावग्रस्त होना, भयभीत होना, रोना-पीटना, शोक करना, संताप करना, पश्चाताप करना, प्रिय के ना मिलने पर कष्ट, अप्रिय के मिलने पर कष्ट, इच्छा-



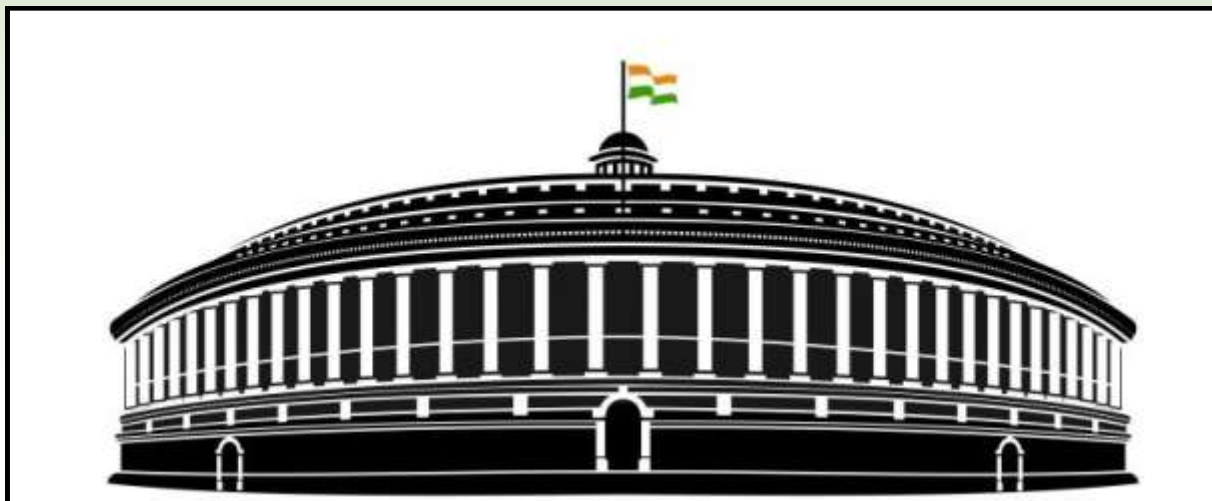
अनुकूल ना मिलने पर कष्ट, जन्म से अविद्या और तृष्णा के कारण कष्ट, रोगी होना, बुढ़ापा, मृत्यु आदि को दुख का कारण मानना क्योंकि इनके साथ तृष्णा जुड़ी है और इसका समाधान बुद्ध के आष्टांगिक मार्ग को अपनाने से पाया जा सकता है। इस मठ में वहां के अनुयायियों बड़ी कड़ाई और तत्परता के साथ इनका पालन करना होता है।

मठ में एक कीमती 'थंगा' पेंटिंग रखी हुई है जो इसकी खास पहचान है तथा देखने योग्य भी है। मठ की मुख्य संरचना के पीछे, वहां भारी साज - सज्जा वाला कर्मा नालंदा इंस्टीट्यूट ऑफ बौद्धिस्ट स्टडीज है जहां दुनिया भर से छात्र शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। यह रूमटेक धर्म चक्र केन्द्र, मठ से 2 किमी. की दूरी पर स्थित है। इस केन्द्र में अनूठे धार्मिक शिलालेख, पुस्तकों और कला वस्तुओं का संग्रह है। इन कला की वस्तुओं के प्रदर्शन के अलावा, यह केन्द्र प्रत्येक वर्ष के दसवें महीने में 28 और 29 तारीख को वार्षिक नृत्य का आयोजन करता है। यह स्थल, सिक्किम का सबसे ज्यादा भ्रमण किए जाने वाले जगहों में से एक है।

— आर के सिंह

संसद भवन

भारत के सर्वाधिक भव्य भवनों में से एक है संसद भवन जहाँ विश्व में किसी भी देश में मौजूद वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूनों की उज्ज्वल छवि मिलती है। राजधानी में आने वाले भ्रमणार्थी इस भवन को देखने जरूर आते हैं जैसा



कि संसद की दोनों सभाएं लोक सभा और राज्य सभा इसी भवन के अहाते में स्थित हैं। संसद भवन संपदा के अंतर्गत संसद भवन, स्वागत कार्यालय भवन, संसदीय ज्ञानपीठ (संसद ग्रंथालय भवन) संसदीय सौध और इसके आस-पास के विस्तृत लॉन, जहां फव्वारे वाले तालाब हैं, शामिल हैं। संसद के सत्रों के दौरान और अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर भवन में महत्वपूर्ण स्थलों को विशेष रूप से पुष्पों से सुसज्जित किया जाता है।

विद्यमान व्यवस्था के अनुसार संपूर्ण संसद भवन संपदा और विशेषकर दोनों सभाओं के चैम्बर्स में पूरे वर्ष कड़ी सुरक्षा रहती है। संपूर्ण संसद भवन संपदा सजावटी लाल पत्थर की दीवार या लोहे की जालियों से घिरा है तथा लौह द्वारों को आवश्यकता पड़ने पर बंद किया जा सकता है। संसद भवन संपदा से होकर गुजरने वाले पहुंच मार्ग संपदा का हिस्सा है और उनका उपयोग आम रास्ते के रूप में करने की अनुमति नहीं है।

संसद भवन की अभिकल्पना दो मशहूर वास्तुकारों - सर एडविन लुटग्रन्स और सर हर्बर्ट बेकर ने तैयार की थी जो नई दिल्ली की आयोजना और निर्माण के लिए उत्तरदायी थे। संसद भवन की आधारशिला 12 फ़रवरी, 1921 को द ड्यूक ऑफ कनाट ने रखी थी। इस भवन के निर्माण में छह वर्ष लगे और इसका उद्घाटन समारोह भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड इर्विन ने 18 जनवरी, 1927 को आयोजित किया। इसके निर्माण पर 83 लाख रुपये की लागत आई।

संसद भवन एक विशाल वृत्ताकार भवन है जिसका व्यास 560 फुट (170.69 मीटर) है और इसकी परिधि एक मील की एक तिहाई 536.33 मीटर है तथा यह लगभग छह एकड़ (24281.16 वर्ग मीटर) क्षेत्रफल में फैला हुआ है। इसके प्रथम तल पर खुले बरामदे के किनारे-किनारे क्रीम रंग के बालुई पत्थर के 144 स्तंभ हैं और प्रत्येक स्तंभ की ऊंचाई

27 फुट (8.23 मीटर) है। भवन के 12 द्वार हैं जिनमें से संसद मार्ग पर स्थित द्वार सं. 1 मुख्य द्वार है।

भवन की मूल संरचना सीमेंट कंक्रीट की ढांचा वाली संरचना के रूप में परिकल्पित की गई है जिसमें सामान्यतः 5 मीटर के अंतर पर स्तम्भों के लिए स्थान छोड़ा गया है। मध्यवर्ती फ्लोर कॉफर एकक निर्माण के स्वरूप के हैं जबकि छत में अंशतः कॉफर एकक हैं और आंशिक रूप से इस्पात तथा कंक्रीट के गुम्बद हैं। गुम्बदों का अभिकल्प और इसका निर्माण देश में अनुपम है।

12 में से दो गुम्बदों में ए.आई.एस.आई. 304 एल ग्रेड के स्टेनलेस स्टील का प्रयोग किया गया है। इस्पात को पूर्णतः स्तरीय बनाया गया है। अन्य सभी गुम्बद कार्बन स्टील के हैं जिन पर इपौक्सी पेन्ट कर इन्हें पूरा किया गया है। फ्रेमवर्क के सभी जोड़ों को ढलाई द्वारा सांचों में ढालकर एच.एस.एफ.जी. बोल्टों के संयोजन से टयूब से जोड़ा गया था और नियंत्रित स्थितियों में इनकी वेल्डिंग की गई थी। इसके परिणामस्वरूप 12 मेम्बरो के एक ही संयुक्त स्थल पर मिलने की जगह भी जोड़ पतले दिखते हैं।

गुम्बद के विभिन्न तत्त्वों यथा कास्ट ज्वाइंट्स (वक्रित) टयूब्स और स्टील के ढांचे पर लगा पूर्वनिर्मित कंक्रीट बबल्स के विनिर्माण और इसके संयोजन के मामले में ज्यामितीय सुनिश्चितता प्राप्त हुई। इस तथ्य के बावजूद कि भवन का निर्माण स्वदेशी सामग्री से और भारतीय श्रमिकों द्वारा किया गया है, भवन के वास्तुशिल्प में भारतीय परंपरा की गहरी छाप मिलती है।

भवन के भीतर और बाहर फव्वारों की बनावट, भारतीय प्रतीकों छज्जों के प्रयोग जो दीवारों और खिड़कियों पर छाया का काम करते हैं और संगमरमर से बनी तरह-तरह की जाली प्राचीन इमारतों और स्मारकों में झलकते शिल्प कौशल का स्मरण कराते हैं। इसमें भारतीय कला की प्राचीन विशेषताओं के साथ ध्वनि व्यवस्था, वातानुकूलन, साथ-साथ भाषांतरण और स्वचालित मतदान आदि जैसी आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियां शामिल हैं। भवन का केन्द्रीय तथा प्रमुख भाग उसका विशाल वृत्ताकार केन्द्रीय कक्ष है।

इसके तीन ओर तीन कक्ष लोक सभा, राज्य सभा और पूर्ववर्ती ग्रंथालय कक्ष (जिसे पहले प्रिंसेस चैम्बर कहा जाता था) हैं और इनके मध्य उद्यान प्रांगण है। इन तीनों कक्षों के चारों ओर एक चार मंजिला वृत्ताकार भवन है, जिसमें मंत्रियों, संसदीय समितियों के सभापतियों के कक्ष, दलों के कार्यालय, लोक सभा तथा राज्य सभा सचिवालयों के महत्त्वपूर्ण कार्यालय और साथ ही संसदीय कार्य मंत्रालय के कार्यालय हैं।

—इन्द्र ज्योति राय



मोबाइल टावर व बीमारियां

शंका पहले भी थी और इस पर काफी विवाद भी हो चुका है, लेकिन अब एक ताजा अध्ययन का कहना है कि मोबाइल फोन के लिए लगाए ऊंचे टावरों से पैदा होने वाला विकिरण आसपास रहने वाले लोगों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर डालता है। मोबाइल फोन के टावर से पैदा होने वाले विकिरण से जो बीमारियां हो सकती हैं उनमें सिरदर्द के अलावा थकान, याददाश्त में कमी और दिल व फेफड़ों की बीमारियां शामिल हैं। यह अध्ययन नेताजी सुभाष चंद्र बोस कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट कोलकाता ने किया है। शोधकर्ताओं का दावा है कि इन इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों से कैंसर तक हो सकता है। शोधकर्ताओं ने इन टावरों के आसपास रहने वाले सैकड़ों लोगों से बातचीत के आधार पर यह रिपोर्ट तैयार की है। इनमें से कुछ लोग तो उन इमारतों में रहते हैं जिनकी छतों पर ऐसे टावर लगे हैं। बाकी लोग उनके 50 मीटर के दायरे में रहते हैं।

कोलकाता के केंद्रीय इलाके में ऐसे टावरों का घनत्व बहुत ज्यादा है। इन सबका कहना था कि उनको किसी न किसी बीमारी से जूझना पड़ रहा है। इस अध्ययन रिपोर्ट में कहा गया है कि विकिरण की वजह से टावर के पास रहने वाले ज्यादातर लोग किसी चीज पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पाते। बहुत से लोगों को रात को ठीक से नींद भी नहीं आती।

विशेषज्ञों की राय है कि ज्यादातर लोगों का कहना था कि अपने घर से दूर जाने पर उनकी बीमारियों का असर कम हो जाता है। लेकिन घर आते ही वे पहले जैसी हालत में लौट आते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि इस रिपोर्ट के नतीजों की पुष्टि के लिए और तकनीकी सबूत जरूरी हैं। लेकिन इस मामले पर गंभीरता से ध्यान देना होगा। टावर से निकलने वाली इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगें कोशिकाओं को नष्ट कर कैंसर पैदा करने में सक्षम हैं। इससे दिल की बीमारियां भी पैदा हो सकती हैं।

महानगर कोलकाता के चित्तरंजन नेशनल कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक जयदीप विश्वास कहते हैं, "टावर के आसपास रहने वाले लोग चौबीसों घंटे विकिरण की जद में रहते हैं। इससे उन लोगों को खासकर बहरापन, अंधापन और मेमोरी लॉस होने की आशंका ज्यादा है।" वह कहते हैं कि विकिरण का ब्रेन ट्यूमर से कोई सीधा संबंध है या नहीं, इसकी पुष्टि के लिए अभी और विस्तृत अध्ययन जरूरी है। विश्वास का कहना है कि ऐसे अध्ययनों के होने तक मोबाइल फोन के टावरों को ज्यादा आबादी वाले इलाकों में लगाने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

चौबीसों घंटे इलेक्ट्रोमैग्नेटिक तरंगों की जद में रहने का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ना लाजिमी है। इससे ब्रेन ट्यूमर भले नहीं हो, कई दूसरी बीमारियां हो सकती हैं। कुछ साल पहले राज्य सरकार ने ऐसे टावरों से पैदा होने वाले विकिरण पर अध्ययन के लिए एक टीम का गठन किया था। उस टीम के सदस्य और आईआईटी, खड़गपुर के प्रोफेसर सुदर्शन नियोगी कहते हैं, "0.92 वाट्स प्रति वर्गमीटर की निर्धारित सीमा सही नहीं है। छह मिनट तक विकिरण की जद में रहने पर शरीर को उसके कुप्रभाव से मुक्त होने में 23 घंटे 54 मिनट लगते हैं। लेकिन जिन इलाकों में टावरों का घनत्व ज्यादा है वहां ऐसा संभव नहीं होता। नियोगी भी इस मामले को गंभीर बताते हुए और अधिक अध्ययन की जरूरत पर जोर देते हैं।

सेलुलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन आफ इंडिया के महानिदेशक राजन मैथ्यूज इन टावरों का बचाव करते हैं। वह कहते हैं कि विकिरण का स्तर निर्धारित सीमा के भीतर है और अब तक इसके नुकसानदेह होने का कोई ठोस सबूत नहीं मिला है। राजन कहते हैं, "दुनिया के ज्यादातर देशों के मुकाबले भारत में विकिरण का निर्धारित स्तर कम है। यह स्तर हमने नहीं, सरकार ने तय किया है। अब तक कहीं से इसके उल्लंघन की शिकायत नहीं मिली है।"

अंजीर

अंजीर एक वृक्ष का फल है जो पक जाने पर गिर जाता है। पके फल को लोग खाते हैं। सुखाया फल बिकता है। सूखे फल को टुकड़े-टुकड़े करके या पीसकर दूध और चीनी के साथ खाते हैं। इसका स्वादिष्ट जैम (फल के टुकड़ों का मुरब्बा) भी बनाया जाता है। सूखे फल में चीनी की मात्रा लगभग 62 प्रतिशत तथा ताजे पके फल में 22 प्रतिशत होती है। इसमें कैल्सियम तथा विटामिन 'ए' और 'बी' काफी मात्रा में पाए जाते हैं। इसके खाने से कब्जियत दूर होती है।

अंजीर मध्यसागरीय क्षेत्र और दक्षिण पश्चिम एशियाई मूल की एक पर्णपाती झाड़ी या एक छोटे पेड़ है जो पाकिस्तान से यूनान तक पाया जाता है। इसकी लंबाई 3-10 फुट तक हो सकती है। अंजीर विश्व के सबसे पुराने फलों में से एक है। यह फल रसीला और गूदेदार होता है। इसका रंग हल्का पीला, गहरा सुनहरा या गहरा बैंगनी हो सकता है। अंजीर अपने सौंदर्य एवं स्वाद के लिए प्रसिद्ध अंजीर एक स्वादिष्ट, स्वास्थ्यवर्धक और बहु उपयोगी फल है। यह विश्व के ऐसे पुराने फलों में से एक है, जिसकी जानकारी प्रचीन समय में भी मिस्र के फैरोह लोगों को थी। आजकल इसकी पैदावार ईरान, मध्य एशिया और अब भूमध्यसागरीय देशों में भी होने लगी है। प्राचीन यूनान में यह फल व्यापारिक दृष्टि से इतना महत्वपूर्ण था और इसके निर्यात पर पाबंदी थी। आज विश्व का सबसे पुराना अंजीर का पेड़ सिसली के एक बगीचे में है।

अंजीर का वृक्ष छोटा तथा पर्णपाती (पतझड़ी) प्रकृति का होता है। तुर्किस्तान तथा उत्तरी भारत के बीच का भूखंड इसका उत्पत्ति स्थान माना जाता है। भूमध्यसागरीय तट वाले देश तथा वहाँ की जलवायु में यह अच्छा फलता-फूलता है। निस्संदेह यह आदिकाल के वृक्षों में से एक है और प्राचीन समय के लोग भी इसे खूब पसंद करते थे। ग्रीसवासियों ने इसे कैरिया (एशिया माइनर का एक प्रदेश) से प्राप्त किया; इसलिए इसकी जाति का नाम कैरिका पड़ा। रोमवासी इस वृक्ष को भविष्य की समृद्धि का चिह्न मानकर इसका आदर करते थे। स्पेन, अल्जीरिया, इटली, तुर्की, पुर्तगाल तथा ग्रीस में इसकी खेती व्यावसायिक स्तर पर की जाती है।



नाशपाती के आकार के इस छोटे से फल की अपनी कोई विशेष तेज सुगंध नहीं पर यह रसीला और गूदेदार होता है। रंग में यह हल्का पीला, गहरा सुनहरा या गहरा बैंगनी हो सकता है। छिलके के रंग का स्वाद पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता पर इसका स्वाद इस बात पर निर्भर करता है कि इसे कहाँ उगाया गया है और यह कितना पका है। इसे पूरा का पूरा छिलका बीज और गूदे सहित खाया जा सकता है। घरेलू उपचार में ऐसा माना जाता है कि स्थाई रूप से रहने वाली कब्ज

अंजीर खाने से दूर हो जाती है। जुकाम, फेफड़े के रोगों में पाँच अंजीर पानी में उबाल कर छानकर यह पानी सुबह-शाम पीना चाहिए। दमा जिसमें कफ (बलगम) निकलता हो उसमें अंजीर खाना लाभकारी है इससे कफ बाहर आ जाता है।

शारीरिक दुर्बलता के लिए ; अंजीर को हम ताज़ा भी मिल जाये तो सेवन कर सकते हैं या फीर सूखे हुये अंजीर को



दूध में अच्छे से पका कर ले सकते हैं। अंजीर हमारे शरीर की दुर्बलता को खत्म करता है और शरीर को बलशाली बनाता है।

स्नायु दुर्बलता को कम करता है ; अंजीर को दूध में पका के लेने से किसी भी प्रकार की स्नायु दुर्बलता हो उसको कम करता है और स्नायु तंत्रिका को पुष्ट करता

हैं।

घबराहट की स्थिति को नियंत्रित करता है ; कभी कभी हमें अचानक से घबराहट होने लगती है। ऐसे स्थिति में अंजीर का सेवन दूध के साथ करने से आराम या बहुत लाभ मिलत हैं।

थकान को कम करता है ; किसी किसी को हमेशा थकान महसूस होती रहती हो तो उन्हें भी अंजीर का सेवन जरूर करना चाहिए।

कच्चे अंजीरों को कमरे के तापमान पर रख कर पकाया जा सकता है लेकिन उसमें स्वाभाविक स्वाद नहीं आता। घरेलू उपचारों में अंजीर का विभिन्न प्रकार से प्रयोग किया जाता है।

अंजीर की खेती भिन्न-भिन्न जलवायु वाले स्थानों में की जाती है, परंतु भूमध्यसागरीय जलवायु इसके लिए अत्यंत उपयुक्त है। फल के विकास तथा परिपक्वता के समय वायुमंडल का शुष्क रहना अत्यंत आवश्यक है। पर्णपाती वृक्ष होने के कारण पाले का प्रभाव इस पर कम पड़ता है। यों तो सभी प्रकार की मिट्टी में इसका वृक्ष उपजाया जा सकता है, परंतु दोमट अथवा मटियार दोमट, जिसमें उत्तम जल निकास (ड्रेनेज) हो, इसके लिए सबसे श्रेष्ठ मिट्टी है। इसमें प्रायः खाद नहीं दी जाती; तो भी अच्छी फसल के लिए प्रति वर्ष प्रति वृक्ष 20-30 सेर सड़े हुए गोबर की खाद या कंपोस्ट जनवरी-फरवरी में देना लाभदायक है। इसे अधिक सिंचाई की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। ग्रीष्म ऋतु में फल की पूर्ण वृद्धि के लिए एक या दो सिंचाई कर देना अत्यंत लाभप्रद है।

अंजीर के नए पौधे मुख्यतः कृत्तों (कटिंग) द्वारा प्राप्त होते हैं। एक वर्ष की अवस्था की डाल का इस कार्य के लिए प्रयोग किया जाता है। कृत्त जनवरी में लगाए जाते हैं और एक वर्ष बाद इस प्रकार तैयार हुए पौधों को स्थायी स्थान पर पंद्रह-पंद्रह फुट की दूरी पर रोपते हैं। प्रति वर्ष सुषुप्ति काल में इसकी कटाई-छँटाई करनी चाहिए क्योंकि अच्छे फल पर्याप्त मात्रा में नई डालियों पर ही आते हैं। फल अप्रैल से जून तक प्राप्त होते हैं। लगाने के तीन वर्ष बाद वृक्ष फल देने लगता है और एक स्वस्थ, प्रौढ़ वृक्ष से लगभग 400 फल मिलते हैं। पत्तियों के निचले भाग में एक प्रकार का रोग लगता है जिसे मंडूर (रस्ट) कहते हैं, परंतु यह रोग विशेष हानिकारक नहीं है। — शिवांश कुमार

जानें भारतीय नोटों के बारे में

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था वहां की मुद्रा पर आधारित होती है। पूरी दुनिया में जबसे मुद्रा का चलन हुआ है तब से मुद्रा ने अनेक रूप और स्वरूप धारण किए। एक देश की मुद्रा एक तरह की तो दूसरे देश की मुद्रा किसी दूसरे तरह की होती है। मनुष्य अपने ज्ञान और आवश्यकता के अनुरूप मुद्रा का निर्माण करता है। वैसे तो मुद्रा का संपूर्ण दायित्व सरकार का होता है और वही इसके निर्माण, वितरण और वापसी के लिए जिम्मेवार होती है। भारत में भी मुद्रा ने ऐतिहासिक काल से लेकर अब तक विभिन्न स्वरूप धारण किए हैं। परंतु आज की जो मुद्रा है आज के संदर्भ में उसे जानना ज्यादा समीचीन होगा। आइए देखते हैं कि भारतीय मुद्रा कैसे बनती और बाजार में चलती है -

अशोक स्तंभ वाले बैंकनोट

स्वतंत्र भारत द्वारा सर्वप्रथम वर्ष 1949 में 1 का नोट जारी किया गया। पुराने डिज़ाइन को बरकरार रखते हुए, वाटर मार्क विंडो के भीतर किंग जार्ज की चित्र की जगह सारनाथ स्थित अशोक स्तंभ के सिंहाकृति प्रतीक के साथ नये बैंकनोट जारी किये गये।

वर्ष 1951 से नये बैंकनोटों पर नोट जारीकर्ता का नाम, मूल्यवर्ग और वचन खण्ड हिन्दी में मुद्रित किये गये। वर्ष 1954 में 1000, 5000 और 10,000 मूल्यवर्ग के बैंकनोट जारी किये गये। वर्ष 1967 और 1992 के दौरान 10 मूल्यवर्ग, 1972 और 1975 में 20 मूल्यवर्ग, 1975 और 1981 में 50 मूल्यवर्ग, 1967 से लेकर 1979 के बीच 100 मूल्यवर्ग में अशोक स्तंभ वाटर मार्क श्रृंखला में बैंकनोट जारी किये गये। उपर्युक्त अवधि में जारी ये बैंकनोट विज्ञान और टेक्नालॉजी, प्रगति, भारतीय कला के उत्कर्ष को प्रस्तुत करनेवाले प्रतीकों से युक्त थे। वर्ष 1980 में “सत्यमेव जयते” अर्थात् “सत्य की जीत होती है”, इस अर्थ के वाक्य को राष्ट्रीय चिन्ह के अंतर्गत प्रथम बार समाविष्ट किया गया। अक्टूबर 1987 में महात्मा गांधी के चित्र और अशोक स्तंभ वाटर मार्क सहित 500 मूल्यवर्ग का बैंकनोट जारी किया गया।



महात्मा गांधी (एमजी) श्रृंखला 1996

महात्मा गांधी श्रृंखला - 1996 में बैंक नोट 5 (नवंबर 2001 में जारी), 10 (जून 1996), 20 (अगस्त 2001), 50 (मार्च 1997), 100 (जून 1996), 500 (अक्टूबर 1997) और 1000 (नवंबर 2000) मूल्यवर्ग में जारी किये गये। इस श्रृंखला के सभी बैंकनोटों के अग्र भाग पर अशोक स्तंभ की सिंहाकृति प्रतीक, जिसे बरकरार रखते हुए वाटर मार्क विंडो के पास बायीं ओर स्थानांतरित किया गया है, की जगह महात्मा गांधी का चित्र अंकित किया गया। इसका अर्थ यह है कि इन बैंकनोटों में महात्मा गांधी के चित्र के साथ महात्मा गांधी वाटर मार्क भी मौजूद है।

एमजी श्रृंखला – 2005 बैंकनोट

10, 20, 50, 100, 500 और 1000 के मूल्यवर्ग में एमजी श्रृंखला 2005 के बैंकनोट जारी किये गये हैं और इनमें एमजी श्रृंखला 1996 की तुलना में कुछ अतिरिक्त/नयी सुरक्षा विशेषताएं हैं। 50 और 100 के बैंकनोट अगस्त 2005 में, उसके बाद 500 और 1000 मूल्यवर्ग के अक्टूबर 2005 में तथा 10 और 20 के क्रमशः अप्रैल 2006 एवं अगस्त 2006 में जारी किये गये।

एमजी श्रृंखला 2005 बैंकनोटों की सुरक्षा विशेषताएं निम्नानुसार हैं

i. सुरक्षा धागा: 10, 20 और ₹.50 मूल्यवर्ग के बैंकनोटों में चमकीले रंग का मशीन द्वारा पठनीय सुरक्षा धागा नोट के अग्र भाग पर विंडो के भीतर और पृष्ठ भाग पर पूरी तरह से गुंथा हुआ है। यह धागा पराबैंगनी (अल्ट्रावायलेट) रोशनी में दोनों तरफ से पीले रंग का चमकीला दिखायी देता है। रोशनी के सामने पकड़ने पर यह धागा पीछे से एक सतत रेखा के रूप में दिखायी देता है। ₹.100, ₹.500 और ₹.1000 मूल्यवर्ग के बैंकनोटों में विंडो के भीतर विभिन्न कोणों से देखने पर हरे रंग से नीले रंग में परिवर्तित होनेवाला मशीन द्वारा पठनीय सुरक्षा धागा है। पराबैंगनी रोशनी में यह धागा पृष्ठ भाग पर पीले रंग का और अग्र भाग पर अक्षर चमकीला दिखायी देता है। इसके अलावा, ₹.1000 के बैंकनोटों पर सुरक्षा धागे में बारी-बारी से देवनागरी लिपि में "भारत" और "RBI" शब्द दिखायी देते हैं। ₹.1000 के बैंकनोट के सुरक्षा धागे में देवनागरी लिपि में "भारत", "1000" और "RBI" मौजूद हैं।

भारतीय नोटों की सुरक्षा व्यवस्था

1. उभारदार मुद्रण: - महात्मा गांधी का चित्र, रिजर्व बैंक की मुहर और गारंटी तथा वचन खण्ड, अशोक स्तंभ का प्रतीक चिन्ह, भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर और कमजोर दृष्टिवाले व्यक्तियों के लिए पहचान चिन्ह सुधारित उभारदार मुद्रण (इंटेग्लियों प्रिंटिंग में अर्थात् जिसे छूकर महसूस किया जा सकता है) में मुद्रित किये गये हैं।

2. आरपार मिलान मुद्रण – वाटर मार्क विंडों के आगे बैंकनोट की बायीं ओर प्रत्येक मूल्यवर्ग के (10, 20, 50,



100, 500 और 1000) अंक का आधा हिस्सा आगे की ओर तथा आधा हिस्सा पीछे की ओर मुद्रित हैं। दोनों मुद्रित हिस्से आगे - पीछे इतने सटीक छपे हैं कि रोशनी के सामने देखने पर ऐसा लगता है कि ये एक ही हैं।

3. वाटर मार्क और इलेक्ट्रोटाइप वाटर मार्क- बैंकनोट में वाटरमार्क विंडो में धूप छाँव के प्रभाव दर्शानेवाली बहुदिशात्मक रेखाओं के साथ महात्मा गांधी का चित्र है। प्रत्येक मूल्यवर्ग के बैंकनोट में क्रमशः 10, 20, 50, 100, 500 और 1000 मूल्यवर्गीय अंक को दर्शानेवाला इलेक्ट्रोटाइप मार्क भी वाटर मार्क विंडों में दिखाई देता है और बैंकनोट को रोशनी के सामने देखने पर उसे बेहतर रूप में देखा जा सकता है।

4. प्रकाशीय रंग परिवर्तक स्याही- 500 और 1000 के बैंकनोटों में उनके मूल्यवर्गीय अंक 500 और 1000 ऑप्टिकली वेरियेबल इंक अर्थात् प्रकाशीय रंग परिवर्तक स्याही से मुद्रित हैं। जब इन नोटों को समतल पकड़ा जाता है तो इन अंकों का रंग हरा दिखाई देता है लेकिन जब इन्हें तिरछा कर दिया जाता है तो यह रंग बदलकर नीला हो जाता है।

5. फ्लुऐरेसिन्स - बैंकनोटों के संख्या पटल चमकीली स्याही से मुद्रित हैं। इनमें दोहरे रंगवाले प्रकाशीय धागे भी हैं। दोनों को अल्ट्रा वायलेट लैम्प की रोशनी में देखा जा सकता है।

6. लेटेंट इमेज- 20 और उससे ऊपर के मूल्यवर्ग के बैंकनोटों में, महात्मा गांधी के चित्र के पास में (दायीं ओर) एक खड़ी पट्टी है जिसमें मूल्यवर्ग के अनुसार 20, 50, 100, 500 या 1000 के मूल्यवर्गीय अंक को दर्शाता है। नोट को हथेली पर रखने और उस पर 45 डिग्री से रोशनी पड़ने पर इस मूल्य को देखा जा सकता है। अन्यथा ये विशेषता केवल एक खड़ी पट्टी जैसी दिखाई देगी।

बंगाल की शान तांत

हमारे देश के विभिन्न प्रांत खास साड़ियों के लिए मशहूर हैं जैसे बनारस की बनारसी, तमिलनाडु की कांजीवरम, गुजरात की पैठणी, लखनऊ की चिकन, चेन्नई की मद्रासी सिल्क, जयपुर की जयपुरी या बाटिक प्रिंट आदि। ये खास साड़ियां भारतीय महिलाओं द्वारा विशेष तरीके से पहनी जाती हैं और अपने प्रांत विशेष की पहचान को भी दर्शाती हैं।

पश्चिम बंगाल मशहूर है अपनी तांत की साड़ियों के लिए। जी हां, तांत या कहे प्योर कौटन। बंग समुदाय के लिए कोई भी उत्सव हो, तांत के बिना वे स्वयं को अधूरा मानते हैं। तांत साड़ियों की खास बात यह है कि साड़ी धागे की बनी होती है, जिसे कारीगर स्वयं अपने हाथों से बनाते हैं। कलर, वेराइटी, प्रिंट और नाना प्रकार की डिजाइनों के कारण आज बंग समुदाय ही नहीं, गैर बंग समुदाय में भी यह अत्यंत लोकप्रिय होता जा रहा है। यही वजह है कि बाजार में इस की डिमांड और कीमत दोनों ही हमेशा बढ़ी हुई रहती हैं।

पश्चिम बंगाल के शांतिपुर, फुलिया, कृष्णानगर और धोनेखाली की खास तांत की साड़ियां पूरे देश में मशहूर हैं। ये कौटन की बनी होती हैं। सामान्यता ये हाथ से निर्मित होने के कारण होती हैं। बाजार में इस की कीमत 200 रुपए से प्रारंभ हो कर उस के बाद जैसी साड़ी वैसी कीमत। लोग कहते हैं कि तांत साड़ी को पहनते ही नारी में अलग ही निखार आ जाता है और यदि साड़ी के अनुरूप गहने भी पहन लिए गए हो तो सोने में सुहागा

धोनेखाली तांत की साड़ियां

तांत 2 प्रकार की होती है। पहली शांतिपुरी तांत और दूसरी धोनेखाली तांत। यह केवल कौटन में होती है। घर में डेली यूज के लिए यह साड़ी आरामदायक और सस्ती भी होती है। धोनेखाली साड़ियां प्लेन और चेक दोनों प्रकार की होती हैं। इस की खास पहचान यह होती है कि इस के आंचल में 2 जगह पतली सी लाइन होती है, जिस में छोटीछोटी बुनाई रहती है। पश्चिम बंगाल के धोनेखाली जगह में इस प्रकार की साड़ियां बनाई जाती हैं।

शांतिपुरी तांत की साड़ियां

यह कौटन और सिल्क दोनों प्रकार की होती है। इस में धागे का काम कारीगरों द्वारा हाथ से किया जाता है। शांतिपुरी तांत में तांत सिल्क प्रमुख है। तांत सिल्क में करीगर धागे से बुनाई करते हैं। तांत सिल्क अर्थात तांत और सिल्क की बूटी। इस का बार्डर पतला और पूरी साड़ी में बूटियां होती हैं। लेकिन आंचल नहीं होता।

साड़ी का रखरखाव

हाथ से निर्मित होने के कारण तांत की साड़ी में कोई भी तकनीकी परिवर्तन देखने को नहीं मिलेगा। रंग, प्रिंट और डिजाइन सदैव परिवर्तित मिलेंगे। कौटन और सिल्क मिक्स होने के कारण इस की देखभाल उतनी ही आवश्यक है जितनी कि आप के लिए इस का पहनना। तांत की धोनेखाली साड़ी सस्ती होने के कारण आप इसे घर पर धो सकती हैं। लेकिन तांत सिल्क, बालूचुड़ी, बनारसी, जामदानी आदि साड़ी कांसली होने के कारण लांड्री में धुलाई, चर्क और पौलिश कराना आवश्यक है। तभी आप साड़ी की लाइफ को बरकरार रख सकती हैं।

— सुचेता कृपाशंकर

पोंगल

त्योहार भारतीय जीवन का सरस पहलू हैं। धार्मिक ही नहीं सामाजिक जीवन में भी ये हर्षोल्लास की झंकार भर देते हैं। भारत का कोई भी मौसम या महीना इनके बिना नहीं कटता। जनवरी तो साल का पहला महीना है। मकर संक्रान्ति भारत का बड़ा पर्व है जो अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तरीके से मनाया जाता है। पंजाब में लोहड़ी, गुजरात में पतंग उत्सव, तमिलनाडु में पोंगल और असम में माघ बिहू और उत्तर प्रदेश में माघ मेला। भारत की छिटकती हुई रंगीन पच्चीकारी संस्कृति में हर त्योहार का रंग यहाँ की संस्कृति की तरह अलग होते हुए भी एक है और एक होते हुए भी अलग। यह सभी पर्व अंग्रेजी तिथि के अनुसार 13-14 जनवरी को मनाए जाते हैं।

लोहिड़ी का प्रमुख आकर्षण तेरह की रात का अलाव होता है। मौसम की फसल की चीज़े खाने पीने में होती हैं। रेवड़ी, मूँगफली गन्ने के रस की खीर और नाच गाना। असम के भोगली बिहू में भी अलाव और भोजन इस पर्व के प्रमुख आकर्षण होते हैं। युवक युवतियाँ सारी रात जागते और नाचते-गाते हैं।

गुजरात के पतंग उत्सव के दिन सारा आकाश रंग बिरंगी पतंगों से भर जाता है। छोटे-छोटे कागज़ के दियों की टिमटिमाती हुई रौशनी से बनाई गई विशेष पतंगें आकाश में अपनी छटा बिखेर देती हैं। विशेष रूप से तैयार किए गए गुजराती व्यंजन, हस्तकला के नमूने और लोक कला इस पर्व की सुन्दरता को बढ़ा देते हैं।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर मनाया जाने वाला पोंगल अपनी विशिष्टताओं के लिए जाना जाता है। तमिलनाडु में पोंगल लगातार तीन दिनों तक मनाया जाता है। पहला दिन भोगी पोंगल जो घर में उत्सव मनाने का है। दूसरे दिन सूर्य देवता को सुगंधित चावल अर्पित किए जाते हैं। इसके अगले दिन मट्टू पोंगल को गाँव का सबसे प्रचण्ड कार्यक्रम होता है। पशुओं को नहला कर, उन्हें सजा-सँवार कर उनकी दौड़ कराई जाती है जो गाँव के जनजीवन में उत्साह का संचार कर देती है। मूलतः इसमें भी सूर्य की पूजा मानी जाती है क्योंकि सूर्य ही धरती का वह देवता है जिससे जीवन का व्यापार चलता रहता है। यदि इसकी किरणों में गरमी न हो तो फसलें पक नहीं पाएंगी और फसलों के अभाव में मनुष्य का जीवन समाप्त हो जाएगा।

इस दिन तमिलनाडुवासी बुरी रीतियों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करते हैं। यह कार्य 'पोही' कहलाता है जिसका अर्थ है - 'जाने वाली'। इसके द्वारा वे लोग बुरी चीज़ों का त्याग करते हैं और अच्छी चीज़ों को ग्रहण करने की प्रतिज्ञा करते हैं।

पोही के अगले दिन अर्थात् प्रतिपदा को पोंगल की धूम मच जाती है। इस अवसर पर सभी छोटे-बड़े लोग काम में आने वाली नई चीज़े खरीदते हैं और पुरानी चीज़ों को बदल डालते हैं। नए वस्त्र और नए बर्तन खरीदे जाते हैं।

नए बर्तनों में दूध उबाला जाता है। खीर बनाई जाती है। लोग पकवानों को लेकर इकट्ठे होते हैं, और सूर्य भगवान की पूजा करते हैं। मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरायण में चला जाता है दिन बड़े होने लगते हैं। सूर्य भगवान की कृपा होने पर ही फसलें पकती हैं। किसानों को उनकी वर्ष भर की मेहनत फल मिलता है।

ये त्योहार तमिलनाडु का त्योहार अवश्य है पर इसके पीछे जो आध्यात्मिक संदेश छिपा है वह सम्पूर्ण भारतवासियों के लिए पवित्रता और नवोत्साह का संदेश देता है। इस त्योहार पर गाय के दूध के उफान को बहुत महत्व दिया जाता है। उनका विचार है कि जिस प्रकार दूध का उफान शुद्ध और शुभ है उसी प्रकार प्रत्येक प्राणी का मन भी शुद्ध संस्कारों से उज्ज्वल होना चाहिए। इसलिए वे अन्तःकरण की शुद्धता के लिए सूर्यदेव से प्रार्थना करते हैं।

— विजय कुमार तिवारी

किर-मत बदल गई

शाम धीरे-धीरे सरक रही थी। बुधिया का मन घबड़ा रहा था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि पवन को आज घर लौटने में इतनी देर क्यों हो रही है! पवन उसका एक मात्र बेटा था। कहने को तो दुनिया में उसको पति का साथ छोड़ कर सब कुछ था पर वह किसी काम का नहीं था।

देवर-देवरानी, जेठ जेठानी, सास-ससुर के होते हुए भी वह किसी अभागीन से बेहतर जीवन नहीं जी रही थी। जीती भी कैसे जब पति जवानी में ही साधु बन कर घर छोड़ गया। कुछ दिनों तक सास-ससुर ने उसका ख्याल रखा भी पर धीरे-धीरे उनका भी मन बुधिया की तरफ से मुड़ गया।

पवन तब मात्र पांच साल का ही था जब उसका बाप साधु बन गया था। लोगों ने उसके बाप को बहुत समझाया था कि अपने बेटे और पत्नी को किसके सहारे छोड़कर जा रहे हो, तो उसका एक ही जबाब था- “धरती ईश्वर ने बनाया है और वही उनकी देखभाल भी करेगा।”

पवन का बाप साधु बन गया। बहुत रोई थी बुधिया पर उसके आंसुओं की नदी भी पति के पैरों में माया की बेड़ी नहीं डाल पाई थी। वह रोती रह गई और वह चला गया।

अपनी सभी इच्छाओं पर ताला डाल कर बुधिया पवन को पाल-पोस रही थी। शुरू में घर के सभी बच्चों की तरह पवन को भी वही खाना मिला करता था जो सब लोग खाया करते थे पर यह स्थिति बहुत दिनों तक नहीं रही। अब तो छोटी-छोटी चीजों के लिए भी पवन को तरसना पड़ता था। कल तक जहां उसके दादा-दादी उसे सर पर बिठा कर रखते थे, वही अब छोटी-सी गलती पर भी लंबी फटकार लगाया करते थे।

बेचारी बुधिया सब कुछ देखती सुनती और गाय की तरह चुप रह जाया करती थी। गांव का माहौल होने के कारण उसकी चलती भी क्या! गांव में परदा प्रथा का अंत तो हुआ नहीं था जो वह किसी दूसरे से मिल कर अपने मन की बात भी कह सकती।

पड़ोस का सुजीत, जो बुधिया को भाभी कहता था, कभी-कभार उसका दुःख दर्द सुन लिया करता था। पहले तो उससे बुधिया का बातचीत करना किसी के लिए कोई मायने नहीं रखती पर अब उसका बुधिया के प्रति केवल हमदर्दी रखना भी काफी शक भरी नजरों से देखा जाने लगा था। इसके पीछे बुधिया की देवरानी कमला का ही हाथ था।

कमला पूरा दिन घर में निठल्ला घूमने के बाद भी अपने बच्चे को नहीं संभाल सकती थी। उसके बच्चे को भी बुधिया को संभालना पड़ता था। एक दिन जब बुधिया सुजीत से बात कर रही थी तभी कमला का बेटा जो वहीं खेल रहा था, टूल पर से गिर पड़ा। बच्चे को चोट लग जाने से कमला का पारा सांतवें आसमान पर था। वह बुधिया को खूब जली-कटी सुनाई। उसके दिमाग में यह बात बैठ गई कि यदि यह सुजीत से बात नहीं कर रही होती तो



उसके बच्चे को चोट नहीं लगती।

उसने इस घटना के कारण सबके सामने सुजीत का बुधिया के प्रति पाक रिश्ते को गलत ढंग से उछालना शुरू किया। सास-ससुर व पति के कान बुधिया के विरुद्ध भरने शुरू कर दिए।

कमला का पति भी अपनी भाभी के लिए अच्छे विचार बहुत दिनों तक नहीं संभाला सका और दिन-प्रतिदिन वह कुटिल होता गया। कमला और उसके पति ने एक दिन किसी छोटी बात पर बुधिया को इतना मारा-पीटा कि बेचारी ने कई दिनों तक खाना तक नहीं खाया। काफी कमजोर हो जाने की वजह से जब वह एक दिन शीशे के कुछ बरतन धोने जा रही थी कि पैर डगमगा गए और वह गिर पड़ी और कांच के बरतन टूट गए।

उस दिन तो गजब हो गया। कमला ने पूरा घर आसमान पर उठा लिया और सबके सामने यह कहने लगी कि इसने जान-बूझ कर घर के सारे बरतन गुस्से में तोड़ दिया है। बुधिया के चुप रह जाने से सभी ने कमला की बात का समर्थन कर दिया। बस फिर क्या था, देवर ने बुधिया और पवन को घर से ही निकाल दिया। सास-ससुर ने भी इसका विरोध नहीं किया।



बुधिया और पवन रोते-रोते चले जा रहे थे। भूख लगने की वजह से पवन रोने लगा था। मां के पास था ही क्या जो अपने बेटे को खिलाती। भाग्य की मार से भला कौन बच सकता है! उसका फल तो सभी को भोगना पड़ता था। बुधिया भी अपने कर्मों का फल मान कर चलती जा रही थी।

सुबह से दोपहर होने को आई। मां-बेटे अब तक रेलवे स्टेशन पर आ गए थे। स्टेशन पर मां-बेटे किसी कातर हिरणी की भांति सहमे हुए बैठे थे। उन्हें तो यह पता नहीं था कि उन्हें जाना कहां है। पवन को भूख सहना बहुत मुश्किल हो रहा था। वहीं एक भिखारी को पत्ते के दोने में पूड़ी एवं जलेबी दिखाई दे रही थी। भिखारी उसमें से निकाल-निकाल कर रख रहा था।

पवन अपना रोना-धोना भूल कर ललचाई नजरों से उस भिखारी की ओर देखने लगा। भिखारी उसकी भूख ताड़ गया। वह अपना दोना लेकर पवन के पास आया और बोला-“खाएगा?”

बुधिया के मन में आया कि वह कह दे कि नहीं पर पवन की दशा देख कर वह चुप ही रही। पवन मां को चुप देख कर पहले तो सहमा पर दूसरे ही पल थोड़ा साहस कर पूछा-“मां! बहुत भूख लगी है। कह तो...”।

मां क्या कहती! वह तो फफक-फफककर रो पड़ी। बेटे के हाथ थम गए। लेकिन भिखारी ने अपना दोना पवन की तरफ बढ़ा दिया। पवन ने अपना हाथ बढ़ाया तो जरूर पर कशमकश में फंसा वह न दोना पकड़ पा रहा था न ही अपने हाथ ही खींच पा रहा था, भिखारी ने ही कहा-“बहन, बेटे को यह खाना दे दो। यह काफी भूखा लगता है।”

बुधिया का मुंह खुल गया। वह जोर-जोर से रोने लगी। भिखारी ने उसे सांत्वना दी। कुछ देर बाद वह उन दोनों को अपने घर ले गया।

भिखारी का घर क्या, वह तो मात्र फूस की एक झोपड़ी भर थी। पर उसका दिल बहुत बड़ा था। उसने बुधिया से कहा-“देखो, इस घर को तुम अपना ही घर समझो और आज से अपने बेटे को पढ़ाने के विषय में सोचो।”

पवन की पढ़ाई चलने लगी। भिखारी दिन भर भीख मांगता और उन्हीं पैसों से पवन के पढ़ने का खर्च तथा घर के राशन-पानी का काम चलाया करता। देखते-देखते पवन बी. ए. पास कर गया।

बुधिया यद्यपि पढ़ी-लिखी नहीं थी पर उसने कष्ट झेल कर भी हर तरह के कुसंस्कार की छाया से पवन को दूर रखा था। आज पवन को जवान देख कर मां का हृदय तो फूला ही न समाता और भिखारी मामा का कलेजा भी टंडा

होता। पवन घर की परेशानियों को समझता था। इसलिए यथाशीघ्र नौकरी की तलाश में जुट गया।

ईश्वर मनुष्य को केवल दुःख ही दुःख नहीं देता। जीवन में सुख के दिन भी दिखाता है। पवन को नौकरी मिल गई। वह दिन उस परिवार के लिए सर्वाधिक खुशी का दिन था। पर यह खुशी बहुत दिनों तक नहीं बनी रह सकी।

ईश्वर मनुष्य को केवल दुःख ही दुःख नहीं देता। जीवन में सुख के दिन भी दिखाता है। पवन को नौकरी मिल गई। वह दिन उस परिवार के लिए सर्वाधिक खुशी का दिन था। पर यह खुशी बहुत दिनों तक नहीं बनी रह सकी।

भिखारी की तबीयत खराब होने लगी। उसे सांस की बीमारी ने पूरी तरह जकड़ लिया था। पवन ने बहुत दवा-दारू कराया किंतु सभी व्यर्थ क्योंकि उसकी हालत में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा था। पवन एक दिन ऑफिस जाने की तैयारी कर ही रहा था कि उसके भिखारी मामा ने कहा- “बेटा, आज तुम घर पर ही रुको। मुझे और बचने की उम्मीद नहीं है।”

“ऐसा न कहिए मामा! आपका साया था तभी हम अपने पैरों पर खड़े हो सके हैं। अभी आपका जिंदा रहना बहुत जरूरी है।”

“अब और जी कर करूंगा भी क्या? हां, तुम्हारे लिए मैंने कुछ रख छोड़े हैं।”

पवन ने कुछ भी नहीं कहा। वह चुप ही रह गया।

भिखारी ने कहा-“तालाब के किनारे खड़े पीपल के पेड़ और कुएं के ठीक बीचों-बीच आज दोपहर में तुम कुदल से जमीन खोदो। उसमें एक घड़ा मिलेगा और ...।” कहते-कहते वह अज्ञान हो गया।

बुधिया और पवन के अलावा आस-पास के लोग भी तब तक आ गए। पर भिखारी की दीर्घ तंद्रा टूटने का नाम नहीं ले रही थी। बुधिया अपने मुहबोले भाई की सेवा-सुश्रूषा में लगी रही।

भिखारी द्वारा बताए गए स्थान पर पवन ने जब खोदा तो उसे एक पीतल का घड़ा मिला। वह उस घड़े को लेकर घर आ गया। पवन के घर लौटते ही भिखारी का ज्ञान पुनः वापस लौट आया।

“तुम घड़ा ले आए पवन?”

“हां।”

“उसे अपनी शादी के दिन तक संभाल कर रखना।”

“क्यों मामा?”

“इस प्रश्न का उत्तर बताना ठीक तो नहीं है, फिर भी अब मेरा अंत समय आ गया है। इसलिए बता देता हूं। उस घड़े में एक द्रव्य भरा है जो पच्चीस वर्ष में सोना बन जाएगा। लेकिन अभी उसमें तीन महीने कम हैं। अपनी शादी के दिन ही तुम उसे खोलना। वह धन तुम्हारी बीवी के भाग्य का है। वही इसकी सही अधिकारिणी है।” इतना कहते-कहते भिखारी का सिर एक तरफ लुढ़क गया।

भिखारी का दाह संस्कार कर दिया गया। पवन और उसकी मां अब इस संदर्भ से उबर चुके थे। दो महीने के भीतर ही पवन की शादी अच्छे परिवार में तय हो गई।

शादी के दिन बहू ने उस घड़े का ढक्कन खोला। पूरा घड़ा सोने से भरा पड़ा था। बुधिया और पवन ने सपने में भी यह नहीं सोचा था कि किस्मत बदलते पल भर की भी देरी नहीं होगी।

Y Y Y Y

— प्रियंका पाण्डेय

अंक ज्योतिष में मूलांक

मूलांक 1 :- यह अंक स्वतंत्र व्यक्तित्व का धनी है। इससे संभावित अंह का बोध, आत्म निर्भरता, प्रतिज्ञा, दृढ़ इच्छा शक्ति एवं विशिष्ट व्यक्तित्व का पता चलता है। इसके स्वामी सूर्य हैं। इनके लिए शुभ तिथि 1, 10, 19 एवं 28 तारीख है। चार अंक से इनका जबरदस्त आकर्षण होता है। इनके लिए शुभ दिन रविवार एवं सोमवार है, तो शुभ रंग पीला, हरा एवं भूरा है। इस मूलांक के व्यक्ति शासन के शीर्ष पद पर देखे जाते हैं। छह एवं आठ अंक वाले इनके शत्रु हैं।

मूलांक 2 :- अंक दो का संबंध मन से है। यह मानसिक आकर्षण, हृदय की भावना, सहानुभूति, संदेह, घृणा एवं दुविधा दर्शाता है। इसका प्रतिनिधित्व चन्द्र को मिला है, इस अंक का स्वामी चंद्रमा है 2, 11, 20, 29 तारीख अति शुभ हैं। रविवार, सोमवार एवं शुक्रवार श्रेष्ठ दिन हैं। सफेद एवं हल्का हरा इनके शुभ रंग हैं।

मूलांक 3 :- इस अंक के स्वामी देव गुरु वृहस्पति हैं इससे बढ़ोत्तरी, बुद्धि विकास क्षमता, धन वृद्धि एवं सफलता मिलती है। 3, 12, 21 एवं 30 तारीख इनके लिए विशेष शुभ हैं। मंगलवार, गुरुवार एवं शुक्रवार श्रेष्ठ है। पीला एवं गुलाबी रंग अतिशुभ है। शुभ माह जनवरी एवं जुलाई है। दक्षिण, पश्चिम एवं अग्नि कोण श्रेष्ठ दिशा है।

मूलांक 4 :- इस अंक से मनुष्य की हैसियत, भौतिक सुख संपदा, सम्पत्ति, कब्जा, उपलब्धि एवं श्रेय प्राप्त होता है। इसका प्रतिनिधि हर्षल और राहु हैं। 2, 11, 20 एवं 29 तारीख शुभ है। रविवार, सोमवार एवं शनिवार श्रेष्ठ दिन हैं, जिसमें शनिवार सर्वश्रेष्ठ है। नीला एवं भूरा रंग शुभ है।

मूलांक 5 :- इस अंक का स्वामी बुध है। शुभ तिथि 5, 14 एवं 23 है। सोमवार, बुधवार एवं शुक्रवार श्रेष्ठ है। उसमें शुक्रवार सर्वाधिक शुभ है। सफेद, खाकी एवं हल्का हरा रंग इनके लिए शुभ है। इनके लिए अशुभ अंक 2, 6 और 9 है।

मूलांक 6 :- इस अंक का स्वामी शुक्र है। छह का अंक वैवाहिक जीवन, प्रेम एवं प्रेम-विवाह, आपसी संबंध, सहयोग, सहानुभूति, संगीत, कला, अभिनय एवं नृत्य का परिचायक है। शुभ तिथि माह की 6, 15 एवं 24 तारीख है। मंगलवार, गुरुवार एवं शुक्रवार श्रेष्ठ दिन है जिसमें शुक्रवार सर्वश्रेष्ठ है। आसमानी, हल्का एवं गहरा नीला एवं गुलाबी रंग शुभ हैं। लाल एवं काले रंग का प्रयोग वर्जित है।

मूलांक 7 :- इस अंक का स्वामी केतु है। सात का अंक आपसी तालमेल, साझेदारी, समझौता, अनुबंध, शांति आपसी सामंजस्य एवं कटुता को जन्म देता है। महीना के 7, 16 एवं 25 तारीख सर्वश्रेष्ठ है। 21 जून से 25 जुलाई तक का समय भी श्रेष्ठ है। रविवार, सोमवार एवं बुधवार श्रेष्ठ हैं। जिसमें सोमवार सर्वश्रेष्ठ है। शुभ रंग हरा, सफेद एवं हल्का पीला है।

मूलांक 8 :- इस अंक का स्वामी शनि हैं। 8, 17 एवं 26 तारीख श्रेष्ठ तिथि हैं। शनि का अंक होने से इस अंक से क्षीणता, शारीरिक मानसिक एवं आर्थिक कमजोरी, क्षति, हानि, पूर्णनिर्माण, मृत्यु, दुःख, लुप्त हो जाना या बहिर्गमन हो जाता है, रविवार, सोमवार एवं शनिवार शुभ हैं। जिसमें शनिवार सर्वाधिक शुभ है। भूरा, गहरा नीला, बैंगनी, सफेद एवं काला शुभ रंग है। हृदय एवं वायु रोग इनके प्रभाव क्षेत्र हैं। दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम एवं दक्षिण-पूर्व दिशा शुभ हैं।

मूलांक 9 :- अंक नौ का स्वामी मंगल है। इस मूलांक के लोगों पर मंगल ग्रह का प्रभाव सर्वाधिक है। यह अन्तिम ईकाई अंक होने से संघर्ष, युद्ध, क्रोध, ऊर्जा, साहस एवं तीव्रता देता है। इससे विभक्ति, रोष एवं उत्सुकता प्रकट होती है। इसका प्रतिनिधि मंगल ग्रह है जो युद्ध का देवता है 9, 18 एवं 27 श्रेष्ठ तारीख है। मंगलवार, गुरुवार एवं शुक्रवार शुभ दिन है। गहरा लाल एवं गुलाबी शुभ रंग है। पूर्व, उत्तर-पूर्व एवं उत्तर-पश्चिम दिशा अतिशुभ हैं। हनुमान जी की अराधना श्रेष्ठ है।



आया वसंत लो आया वसंत
फिर से छाई जग में शोभा अनंत।

खिले खेतों में सरसों फूल
आमों की बौरें उठी झूल
बेलों से अब उतरी धूल
हर्षाया मन सबकुछ भूल
आया वसंत लो आया वसंत

खूशबू लेकर बह रही पवन
छाई हरियाली वन वन
लगता अब तो सुंदर आंगन
है मधुर सब दिग-दिगंत
आया वसंत लो आया वसंत।

गाते हैं भौरें नया गान
कोयल की सुनो मधुर तान
सी हो रहें सब के प्राण
हो नहीं अब सुख का अंत
आया वसंत लो आया वसंत
— स्मृति कुमारी

सुबह-सुबह आ जाता सूरज
शोर नहीं मचाता सूरज
न धूल न पसीना
सरदी में मन को भाता सूरज

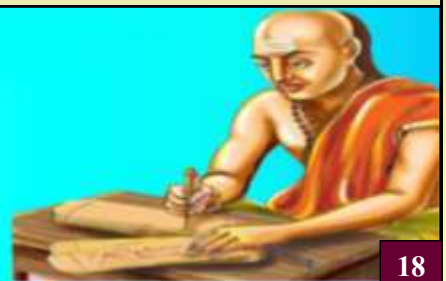
लगा के छतरी बाग में बैठे
रोज मनाता पिकनिक सूरज
पिज्जा, बरगर और मिठाई
मजे सबके लेता सूरज

नरम दूब पर सोता सूरज
ओस की बूंदों पर इठलाता सूरज
हर रोज काम पर आता सूरज
ढले शाम घर को जाता सूरज

जीवन को सहज बनाता सूरज
दिन ढले छुप जाता सूरज
पनघट पर रहता प्यासा सूरज
देखो कितना मनभावन सूरज
— साक्षी कुमारी

कोई भी काम शुरू करने के पहले
तीन सवाल अपने आपसे पूछो ---
मैं ऐसा क्यों करने जा रहा हूँ ?
इसका क्या परिणाम होगा ?
क्या मैं सफल रहूँगा ?”

चाणक्य सविन चाणक्य



मालदा मंडल के फरक्का स्थित बराज व बड़हरवा स्थित बाबा गजेश्वरनाथ धाम के कुछ दृष्य



फरक्का बांध (बैराज) भारतके पश्चिम बंगाल प्रान्त मे स्थित गंगा नदी पर बना एक बांध है। यह बांध बांग्लादेश की सीमा से मात्र 10 किलो मीटर की दूरी पर स्थित है। इस बांध को 19-74-75 मे हिन्दुस्तान कन्स्ट्रक्शन कंपनी ने बनाया था। इस बांध का निर्माण कोलकाता बंदरगाह को गाद से मुक्त कराने के लिये किया गया था जो 1950-1960 तक इस बंदरगाह की प्रमुख समस्या थी। कोलकाता हुगली नदी पर स्थित एक प्रमुख बंदरगाह है परंतु गाद के इकट्ठा हो जाने के कारण वहां से जल यातायात प्रभावित हो जाता था। ग्रीष्म ऋतु में हुगली नदी के बहाव को निरंतर बनाये रखने के लिये गंगा नदी की के पानी के एक बड़े हिस्से को फरक्का बांध के द्वारा हुगली नदी मे मोड़ दिया जाता है। इस पुल पर रेल और सड़क यातायात दोनों ही चलता है।

मालदा मंडल के बड़हरवा स्टेशन से मात्र 20 कि० मी० की दूरी पर अवस्थित बाबा गजेश्वर नाथ मंदिर अपनी अनुपम छटा के लिए विख्यात है। माना जाता है कि भगवान भोले शंकर यहां स्वयं उपस्थित हैं। यह मंदिर बरहेट प्रखंड में स्थित है। मूल मंदिर एक प्राकृतिक गुफा के अंदर अवस्थित है, जहां तक कुल 150 सीढ़ियों की चढ़ाई कर पहुंचा जा सकता है।

हिन्दू धर्मावलम्बियों के लिये शिवगादी किसी तीर्थस्थान से कम नहीं। लोक कथाओं के अनुसार दैत्यराज गजासुर प्रसिद्ध बलशाली राजा महिषासुर का सुयोग्य पुत्र था। महिषासुर के इस सुयोग्य पुत्र ने हजारों वर्ष तक अंगुठे के बल पर उग्र तपस्या कर पूरे ब्रह्माण्ड में जहाँ एक ओर अपनी भक्ति व शक्ति की धाक जमा रखी थी, वहीं देवलोक के देवी-देवताओं के बीच उसकी मौजूदगी से त्राहिमाम मची हुई थी और उन्होंने अंततः भगवान शंकर की शरण लिया। देवताओं की करुण पुकार सुनकर भगवान शंकर ने गजासुर का वध कर दिया। तब से इस जगह को गजेश्वरनाथ धाम या शिवगादी के नाम से जाना जाने लगा।



बसंत के आगमन के स्वागत में मालदा मंडल कार्यालय के उपवन में
प्रस्फुटित मनभावन फूलों के दृश्य

